

गणेशसहस्त्रनामावली

गणेशसहस्त्रनामावली



प्रकाशक :
विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

मूल्य : 50/-

हमारे प्रकाशन

1 कर्मकाण्ड दीपक (हिन्दी-उर्दू) नया एडिशन जिस में धूप दीप, विष्णु पूजन, प्रप्युन, शिवपूजा, दिवचक्षीर पूजा, गृह प्रवेश, शंकुप्रतिष्ठा पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, पन्नपूजा इत्यादि।
2 पंचस्तवी (हिन्दी उर्दू) अर्थ व्याख्या सहित।
3 महिम्नस्तोत्र (हिन्दी उर्दू) अर्थ व्याख्या सहित।
4 भवानी सहस्रनाम।
5 बहुरूप गर्भ (हिन्दी उर्दू)।
6 शिवरात्रि पूजा (हिन्दी उर्दू)।
7 नव स्वाहाकार (सहस्रनामावली) गणेश, विष्णु, सूर्य, शारिका, राज्ञा, ज्वाला, शारदा, शंकर, भवानी।
8 राम गीता। (हिन्दी उर्दू)
9 श्रीमत् भगवद्गीता (हिन्दी उर्दू)।
10 विजयेश्वर नित्य नियम विधि।
11 नव ग्रह पूजा।
12 श्राद्ध विधि।
13 सक्षिप्त दसवां, ग्यारहवां, बारहवां दिन।
14 जातकर्म (काहनेथर)
15 विष्णु सहस्रनाम।
16 लल्ल प्रकाश (हिन्दी में अर्थ व्याख्या सहित)
17 कश्मीरी पण्डितों के 24 संस्कार (हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में)
18 शारदा अक्षर ज्ञान (भाग 1)
19 जगद्धरभट्ट के विलाप (हिन्दी में) अर्थ सहित।

विजयेश्वर कैसटस तथा सी डी

पं0 प्रेमनाथ शास्त्री की वाणी से

पुष्पार्चन

इष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए पुष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें- हर एक व्रत महोत्सव, पर्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ तो अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

विष्णु भंगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** किया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना नेत्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को भगवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

पुष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन के रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट है पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः-

इस पूजा में इष्ट देवता के सहस्त्रनाम के साथ आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके पूजा में प्रयोग न करें, फूल ख़ण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में स्वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित हो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन में बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल अर्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि जलाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले आप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित होने वालों में से जो सहस्त्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में "ॐ" और अन्त में "नमः" जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें जैसे **ॐ महाविद्यायैः नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" ॐ शिवाय नमः"** जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ **"नमः"** का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। **यज्ञ में स्वाहा, पुष्पार्चन में नमः** का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अवश्य पढ़ें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्टदेव का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें–जैसा कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें :–

ॐ अस्य श्री–आसन–शोधन–मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ–ऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता–आसन–शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :–**पृथ्विी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।**

आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :–

ध्रुवा द्यौर्–ध्रुवा–पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्–इदं जगत् ध्रुवो राजा विशाम्–असि। तिलक–फूल–अर्घ्य चढाते हुये पढें :–

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। नमस्कार करते हुए पढें :– **शुक्लाम्बरधंर विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न–वदनं ध्याये सर्व–विघ्नोप–शान्तये। अभि–प्रीतार्थ–सिद्धचर्थं पूजितो यः सैरैर्–अपि। सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधि–पतये नमः।**

गुरुः–ब्रह्मा, गुरुः–विष्णुः गुरुः–साक्षात्–महेश्वरः। गुरुर्–एव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु–वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुरवे

नमः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः

अंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तार:-ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

वसोः पवित्रम्-असि शतधांर वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्त्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

अपने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

परमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

चोंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

"स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः याक्त् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

सूर्यदिवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

यत्रास्ति माता न पिता न ग्वन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य .... मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः धूपोनमः।

श्री गणेश सहस्त्रनाम

स्वाहाकार पूजन-विधि

फूल अग्नि में डालते हुये पढें :-

भैरवः- देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रय-जयोद्यमे। अनर्चनात्-गणेशस्य जातो विघ्न-गणाकुलः। मनसा च विनि-र्माय ततस्तु विघ्नकारकम्। महागणपतिं भक्त्या सम्-अभ्यचर्य यथाविधि। विघ्न-प्रशमनोपायं-पप्रच्छ च परिश्रमम्। संतर्प्य पूजया शम्भो महागणपतिः स्वयं, सर्व-विघ्न-प्रशमनं सर्वाश्रम-फल-प्रदम्। नमस्तस्मै स्वनाम्नैव सहस्त्रम् इदम्-अब्रवीत्

तर्पण कीजिये :-

ॐ अस्य श्रीमहागणपति-सहस्त्रनाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य महागणपतिः ऋषिः गणेशो देवता, नानाविधानि छन्दांसि "हुम्" इति बीजं "ॐ" इति शक्तिः स्वाहा-इति कीलकम्-आत्मनो वांग्मनः कायोपार्जित पाप-निवारणार्थं श्रीमहागणपति-प्रसाद-सिद्धयर्थे होमे, पाठे, पुष्पार्चने विनियोगः।

षड्-अंगन्यास :

ॐ गां हृदयाम नमः ॐगीं शिरसि स्वाहा ॐ गूं शिखायै वषट् ॐ गैं कवचाय हुं ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट ॐ गः अस्त्राय फट

करन्यासः- ॐ गां अँगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ गूँ मध्यमाभ्यां नमः ॐ गैं अनामिकाभ्यां नामः, ॐ गौं कनिष्ठकाभ्यां नमः ॐ गः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः,

प्राणायाम करके हाथ में फूल लेकर (ध्यान) पढिये :-

बिभ्रत-दक्षिण-हस्त-पद्म-युगले, दन्ताक्ष-सूत्रे शुभे वामे-मोदक-

पूर्ण-पात्र-परशू नागोपवीती त्रिदृक्। श्रीमान्-सिंह युगासनः श्रुति युगे शंखौ वहन्-मौलिमान् दिश्यात् ईश्वरपुत्र एष भगवान्-लम्बोदरः शर्म नः।

आहुति अग्नि में डालते हुये पढें :-

ॐ "गं" तत् पुरुषाय विद्महे स्वाहा, वक्रतुण्डाय धीमही स्वाहा तन्नो दन्ती प्रचोदयात् स्वाहा। ॐ गंतत्-पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि स्वाहा, तन्नोदन्ती प्रचोदयात् स्वहा। (3) ॐ "गं" तत्-पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमिही, तन्नो दन्ती-प्रचोदयात् स्वाहा।

अब सावधानी से दोनों आहुति डालने वाला और यजमान एक एक नाम से प्रज्वलित अग्नि में आहुति डालें। हर एक नाम के आरम्भ में "ॐ" शब्द का उच्चारण करें (स्वाहा के पश्चात् ॐ न जोडें)

जैसे "ॐ महाविद्यायै-स्वाहा" 100वीं आहुति डालने से पूर्व, ऐसे ही क्रमशः 200वीं आहुति डालने से पूर्व, "स्रुक्" (जिस में एक रन्ध्र होता है) से "स्रुव" (जिस में दो रन्ध्र होते हैं। स्रुक् से स्रुव को घी से चार बार स्पर्श करते हुये पढें-

तेजोसि, शुक्रम्-असि, ज्योतिर्-असि, धामासि।

पहले निचले रन्ध्र को फिर दोबार ऊपर के रन्ध्र को, फिर स्रुव के निचले रन्ध्र को एक बार स्पर्श करके, स्रुव पर श्रीफल, कन्द या अखरोट रख कर यवतिल की भरी अंजलि हाथ में लेकर गणेश जी का वैदिक मन्त्र पढ़कर 100 वें नाम की आहुति डालें वैदिक मन्त्र :-

ॐ गणानात्वा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्-ऊतिभिः सीद, सादनम्।

ऐसे ही हर 100वीं आहुति ऊपर लिखित विधि से अन्तिम् यानी एक सहस्रवीं आहुति तक अग्नि में आहुति डालकर अन्त में फूल अग्नि में डालते हुये पढें :-

इति वैनायकस्येदं नाम्नां सहस्त्रम्-ईरितम्। इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः, करस्थं तस्य सकलम्-ऐहिकामुष्मिकं सुखम्, आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्-धैर्यं शौर्यं बलं यशः। मेधा प्रजा

धृतिः कान्तिः-सौभाग्यम्-अति-रूपता। सत्यं दया, क्षमा, शान्ति, दाक्षिण्यं धर्मशीलता, सभा-पाण्डित्यम्-औदार्य गाम्भीर्य ब्रह्म-वर्चसम्-ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापं वीर्यम्-आर्यता। ज्ञानं विज्ञानम्-अस्तिक्यं धनं धान्यं भवेत्-ध्रुवम् शाकिनी,, डाकिनी, रक्षो-यक्ष-ग्रहाप-हारकम् साम्राज्य सुखदं सर्व-सपत्न-मद-मर्दनम्। दुःस्वप्न-नाशनं नित्यं स्वामि-चित्त प्रसादनम्। संग्राम-रंगे सर्वेषाम्-इदम्-एकं जय-प्रदम्। गर्भरक्षा करं सर्व वंध्या दोष निवारकम्। पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेर्-इदम्। देशे तत्र न-दुर्भिक्षम्-ईतयो दुरितानि च, मनोरथप्रदं नित्यं सर्वरोग-विनाशकम्, महागणपतये-नाम्नां सहस्त्रं पठ्यते तुयः। सायं मध्यं दिने प्रातः तस्य सिद्धिर्-भवेत-ध्रुवम्।

तर्पण करते हुये पढें :-

अनेन-श्रीगणपति स्वाहाकार-कारहोमेन भगवान् विनायकः एकदन्तः कृष्णापिंगलः गजाननः लम्बोदरः भालचन्द्रः हेरम्भः विघ्नेशः वल्लभा-सहितः श्रीमहागणेशः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

गणेशस्तुतिः

जेतुं यः-त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजात्-बले-र्बन्धने
स्त्रष्टुं वारि-रुहोत्-भवेन विधिना शेषेण र्धतुं धराम्
पार्वत्या महिषासुर-प्रमथने, सिद्धाधिपैः-र्मुक्तये
ध्यातः पञ्च-शरेण लोक-विजये पायात्-स नागाननः (1)
बिभ्रत्-दक्षिण-हस्त-पद्मयुगले दन्ताक्ष-सूत्रे शुभे
वामे मोदक-पूर्णपात्र-परशू नागोपवीती त्रिदृक
श्रीमान्-सिंह युगासनः श्रुति-युगे शंखौ-वहन्-मौलिमान्

दिश्यात्-ईश्वर-पुत्र-एष भगवान्-लम्बोदरः शर्म नः (2)

सिन्दूर-कुंकुम-हुताशन-विदुमार्क रक्ताब्ज दाडिम-निभाय चतु-र्भुजाय।
हेरम्ब-भैरवगणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय नमः शिवाय (3)

विघ्नेशो नमः स पायात्-विह्यतेषु जलधिं, पुष्कराग्रेण पीत्वा
यस्मिन्-उद्गृत्य हस्तं वमति तत्-अखिलं दृश्यते व्योम्नि देवैः
क्वाप्यम्भः क्वापि विष्णुः क्वचन कमलभूः क्वाप्यनन्तः क्वच श्रीः,
क्वाप्यौर्वः क्वापि शैलः क्वचन मणिगणः क्वापि नक्रादि-सत्वाः (4)

निर्वघ्न-विश्वनिर्माण-सिद्धये यत्-अनुग्रहम्
मन्ये स धातापि तस्मै विघ्नजिते नमः
सर्गा-रम्भेपि जाताय बीजरूपेण तिष्ठते
धात्रा कृतप्रणामाय गणाधिपतये नमः (5)

लाक्षा-सिन्दूर सुर-वर-नमितं मोदकैर्-मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं दिनकर-सदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम्
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपशुधरं साखु-सिंहा-सनस्थं
गांगेयं रौद्र-मूर्ति त्रिपुर-वधकरं विघ्नभक्षं नमामि (6)

गौरीपुत्रं त्रिनेत्र गजमुख सहितं, नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्षं सर्वभक्षं सकलजन-प्रियं सर्व-गन्धर्व-पूज्यम्
संपूर्णं भाल-चन्द्रं वरदम् अतिबंल हन्तृकं चासुराणां
हेरम्बम्-आदिदेवं गणपतिम्-अमलं, सिद्धि-धारारम्-ईडे (7)

यं ब्रह्मा वेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये
विश्वत्-गतेः कारणम्-ईश्वरं वा तस्मै नमो विघ्न-विनाशकाय (8)

नमो नमः शाश्वत-शान्ति-हेतवे, क्षमादया-पूरति-चारु-चेतसे
गजेन्द्र-रूपाय गणेश्वराय -ते, परस्य पुंसः प्रथमाय सूनवे, (9)

नमो नमः कारण-कारणायते, नमो नमो मंगल-मंगलात्मने, नमो
नमो वेदविदां मनीषिणाम्-उपासनीयाय नमो-नमो-नमः (10)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ गणेश्वराय नमः

ॐ गणक्रीडाय नमः

ॐ गणनाथाय नमः

ॐ गणाधिपाय नमः

ॐ एकदन्ताय नमः

ॐ वक्रतुण्डाय नमः

ॐ गजवक्त्राय नमः

ॐ महोदराय नमः

ॐ लम्बोदराय नमः

ॐ धूम्रवर्णाय नमः

ॐ विकटाय नमः

ॐ विघ्ननाशकाय नमः

ॐ सुमुखाय नमः

ॐ दुर्मुखाय नमः

ॐ बुद्धाय नमः

ॐ विघ्नेशाय नमः

ॐ अघविनाशनाय

ॐ भीमाय नमः

ॐ प्रमोदाय नमः

ॐ आनन्दाय नमः

ॐ सुरानन्दाय नमः

ॐ मदोत्कटाय, नमः

ॐ हेरम्बाय नमः

ॐ शम्बराय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ लम्बकर्णाय नमः

ॐ महाबलाय नमः

ॐ नन्दनाय नमः

ॐ लुम्पटाय नमः

ॐ भीम,मेघनादाय नमः

ॐ धनञ्जयाय नमः

ॐ विनायकाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ वीराय नमः

ॐ शूर,वरप्रदाय नमः

ॐ महागणपतये नमः

ॐ बुद्धिप्रियाय नमः

ॐ क्षिप्र,प्रसादनायनमः

ॐ रुद्रप्रियाय नमः

ॐ गणाध्यक्षाय नमः

ॐ उमापुत्राय नमः

ॐ गजाननाय नमः

ॐ कुमारगुरवे नमः
ॐ ईशानपुत्राय नमः
ॐ मूषकवाहनाय नमः
ॐ सिद्धिप्रदाय नमः
ॐ सिद्धपतये नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ सिद्धिविनायकाय नमः
ॐ अविघ्नतुम्बर-वे नमः
ॐ सिंहवाहनाय नमः
ॐ मोहिनीप्रियाय नमः
ॐ कटङ्कटाय नमः
ॐ राजपुत्राय नमः
ॐ सालङ्कटाय नमः
ॐ सम्मिताय नमः

ॐ अमिताय नमः

ॐ कूष्माण्डाय नमः

ॐ सामसम्भूताय नमः

ॐ दुर्जयाय नमः

ॐ धूर्जयाय नमः

ॐ नयाय नमः

ॐ भूपतये नमः

ॐ भुवनेशानाय नमः

ॐ भूतानांपतये नमः

ॐ अव्ययाय नमः

ॐ विश्वकर्त्रे नमः

ॐ विश्वमुखाय नमः

ॐ विश्वरूपाय नमः

ॐ अतिनिर्गुणाय नमः

ॐ कवये नमः

ॐ कवीनामृषभाय नमः

ॐ ब्राह्मणाय नमः

ॐ ब्रह्मवित्पतये नमः

ॐ ज्येष्ठराजाय नमः

ॐ श्रीनिधिये नमः

ॐ श्रीपतये नमः

ॐ निधिप्रियाय नमः

ॐ हिरण्यमयपुरा-
न्तःस्थाय नमः

ॐ सूर्यमण्डलमध्य-
गाय नमः

ॐ कराहतिध्वस्त-
सिन्धुसलिलाय नमः

ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः

ॐ उमाङ्गकेलिसम्भूताय नमः

ॐ मुक्तिदाय नमः

ॐ फलदायकाय नमः

ॐ किरीटिने नमः

ॐ कुण्डलिने नमः

ॐ हारिणे नमः

ॐ वनमालिने नमः

ॐ मनोमयाय नमः

ॐ वैमुख्यहतदैत्यश्रिये, नमः

ॐ पादगत्याजितक्षितये नमः

ॐ सद्योजाताय नमः

ॐ स्वर्णकुञ्जमेखलिने नमः

ॐ दुर्निमित्तहृते नमः

ॐ दुःस्वप्नहृते नमः
ॐ प्रहसनाय नमः
ॐ गुणिने नमः
ॐ नादप्रतिष्ठिताय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ स्वरूपाय नमः १००

ॐ सर्वरत्नाढ्यविलसत्-
नूपराय नमः
ॐ यूने नमः
ॐ पीताम्बराय नमः
ॐ खड्गधराय नमः
ॐ खण्डवैशाख-
संस्थिताय नमः

ॐ चित्राङ्गाय नमः

ॐ श्यामदशनाय नमः

ॐ भालचन्द्राय नमः

ॐ हविर्भुजाय नमः

ॐ योगाधिपाय नमः

ॐ तारकस्थाय नमः

ॐ पुरुषाय नमः

ॐ गजकर्णकाय नमः

ॐ गणाधिराजाय नमः

ॐ विजयस्थिराय नमः

ॐ गजपतये नमः

ॐ ध्वजिने नमः

ॐ देवदेवाय नमः

ॐ स्मरत्राणदीप-

कार्य नमः

ॐ वायुकीलकाय नमः

ॐ विपश्चिद्वरदाय नमः

ॐ नादाय नमः

ॐ नादभिन्नमहा-

र-वाय नमः

ॐ वराहवदनाय नमः

ॐ मृत्युञ्जयाय नमः

ॐ व्याघ्रजिना-

म्बराय नमः

ॐ इच्छाशक्ति-

भवाय नमः

ॐ देवत्रात्रे नमः

ॐ दैत्यविमर्दनाय नमः

ॐ शम्भुवक्त्रोद्भवाय नमः

ॐ शम्भुकोपजाय नमः

ॐ शम्भुहास्यभुवे नमः

ॐ शम्भुतेजसे नमः

ॐ शिवाशोकहारिणे नमः

ॐ गौरीसुखावहाय नमः

ॐ उमाङ्गमलजाय नमः

ॐ गौरीतेजोभुवे नमः

ॐ स्वर्धुनीभवाय नमः

ॐ मर्त्यकायाय नमः

ॐ महानादाय नमः

ॐ गिरिवर्ष्मणे नमः

ॐ शुभाननाय नमः

ॐ सर्वात्मने नमः

ॐ सर्वदेवात्मने नमः

ॐ ब्रह्ममूर्ध्ने नमः

ॐ ककुत्पतये नमः

ॐ ब्रह्माण्डकुम्भ-
जिते नमः

ॐ व्योमभालाय नमः

ॐ सत्यशिरोरुहाय नमः

ॐ जगज्जन्मलयोन्-
मेषनिमेषाय नमः

ॐ अग्न्यर्कसोम-
दृशे नमः

ॐ गिरीन्द्रवदनाय नमः

ॐ धर्माय नमः

ॐ धर्मिष्ठाय नमः

ॐ सामबृंहिताय नमः

ॐ ग्रहर्क्ष,दर्शनाय नमः

ॐ वाणी,जिह्वाय नमः

ॐ वायुकि,ना-
सिकाय नमः

ॐ भ्रूमध्य,संस्थित-
ब्रह्मणे नमः

ॐ ब्रह्म,विद्या,मदो-
दकाय नमः

ॐ कुला,चलांसाय नमः

ॐ सोमार्क,घण्टाय नमः

ॐ रुद्रशिरो,धराय नमः

ॐ नदीनद,भुजाय नमः

ॐ सर्पाङ्गुली,काय नमः

ॐ तारकै,र्नखाय नमः

ॐ निम्नगाभये नमः

ॐ श्रीहृदयाय नमः

ॐ मेरुपृष्ठाय नमः

ॐ अर्णवोदराय नमः

ॐ कुक्षिस्थ-यक्ष-गन्धर्व-
रक्षः-किन्नर-
मानुषाय नमः

ॐ पृथ्वीकटये नमः

ॐ सृष्टिलिङ्गाय नमः

ॐ शैलोरवे नमः

ॐ ह्रस्वजानुकाय नमः

ॐ पातालजङ्घाय नमः

ॐ मुनिपादे नमः

ॐ कालाङ्गुष्ठाय नमः

ॐ त्रयीतनवे नमः

ॐ ज्योतिर्मण्डल-
लाङ्गूलाय नमः

ॐ हृदयानल-
निश्चलाय नमः

ॐ हृत्पद्मकर्णि-
कस्थाय नमः

ॐ वियत्केलिसरो-
वराय नमः

ॐ सद्भक्तध्यान-
निगडाय नमः

ॐ पूजावारि-
निवारिताय नमः

ॐ प्रतापिने नमः

ॐ कश्यपाय नमः

ॐ यत्नाय नमः

ॐ गणकाय नमः

ॐ मन्दराय नमः

ॐ बलिने नमः

ॐ यशस्विने नमः

ॐ धार्मिकाय नमः

ॐ नेत्रे नमः

ॐ प्रमथाय नमः

ॐ प्रमथेश्वराय नमः

ॐ चिन्तामणि-
स्थलपतये नमः

ॐ कल्पद्रुमवना-
लयाय नमः

ॐ रत्नमण्डप-
मध्यस्थाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ रत्नसिंहासना-
श्रयाय नमः २००

ॐ तीव्रशिरोद्धृत-
पदाय नमः

ॐ ज्वालिनीमौलि-
लालिताय नमः

ॐ नादज़न्दित-
पीठश्रिये नमः

ॐ भोगदाय नमः

ॐ वह्निधामत्रया-

लयाय नमः

ॐ उन्नतप्रपदाय नमः

ॐ गूढगुल्फाय नमः

ॐ संवृत्तपार्ष्णि-

काय नमः

ॐ पीनजङ्घाय नमः

ॐ श्लिष्टजानवे नमः

ॐ स्थूलोरवे नमः

ॐ प्रोन्नमत्कटये नमः

ॐ निम्ननाभये नमः

ॐ स्थूलकुक्षये नमः

ॐ पीनवक्षसे नमः

ॐ बृहद्भुजाय नमः

ॐ पीनग्रीवाय नमः

ॐ कुम्बकण्ठाय नमः

ॐ लम्बोष्ठाय नमः

ॐ लम्बनासिकाय नमः

ॐ भग्नवामरदाय नमः

ॐ तुङ्गसव्यदन्ताय नमः

ॐ महाहनवे नमः

ॐ ह्रस्वनेत्रत्रयाय नमः

ॐ शूर्पकर्णाय नमः

ॐ निबिडमस्तकाय नमः

ॐ स्तवकाका-
रपाणये नमः

ॐ रत्नमौलये नमः

ॐ निरङ्कुशाय नमः

ॐ भूषिताननाय नमः

ॐ प्रकामदायिनां-
पीठाय नमः

ॐ स्फुरदुग्रासना-
श्रयाय नमः

ॐ तेजोवतांशिरो-
रत्नाय नमः

ॐ सत्यनित्यावतं-
सिताय नमः

ॐ सर्वविघ्न-
विनाशाय नमः

ॐ सर्वशक्त्यम्बु-
जालयाय नमः

ॐ रक्तपद्मासना-

धाराय नमः

ॐ सर्पहारकटि-
सूत्राय नमः
ॐ सर्पयज्ञोप-
वीत-भृते नमः
ॐ सर्पकोटीर-
कटकाय नमः
ॐ सर्पग्रैवेयका-
ङ्गदाय नमः
ॐ सर्पकक्ष्योदर-
बन्धाय नमः
ॐ सर्पराजोत्तर-
च्छदाय नमः
ॐ रक्ताय नमः

ॐ रक्ताम्बरधराय नमः

ॐ रक्तमाल्य-
विभूषणाय नमः
ॐ रक्तेक्षणाय नमः
ॐ रक्तकराय नमः
ॐ नित्यरक्तोष्ठ-
पल्लवाय नमः
ॐ श्वेताय नमः
ॐ श्वेताम्बर-
धराय नमः
ॐ श्वेतमाल्य-
विभूषणाय नमः
ॐ श्वेतातपत्र-
रुचिराय नमः

ॐ श्वेतचामरवीजिताय नमः

ॐ सर्वावयव-

सम्पूर्णाय नमः

ॐ सर्वलक्षण-

लक्षिताय नमः

ॐ सर्वभूषण-

भूषाढ्याय नमः

ॐ सर्वशोभा-

समन्विताय नमः

ॐ सर्वमङ्गल-

मङ्गल्याय नमः

ॐ सर्वकारण-

कारणाय नमः

ॐ सर्वदेवकराय नमः

ॐ शार्ङ्गिणे नमः

ॐ बीजपूरिणे नमः

ॐ गदाधराय नमः

ॐ शुभाङ्गाय नमः

ॐ लोकशुभदाय नमः

ॐ सुतन्तवे नमः

ॐ तन्तुवर्धनाय नमः

ॐ इक्षुचापधराय नमः

ॐ शूलिने नमः

ॐ चक्रपाणये नमः

ॐ सरोजभृते नमः

ॐ पाशिने नमः

ॐ धृतोत्पल-
भराय नमः

ॐ मञ्जरीभृते नमः

ॐ सुदन्तभृते नमः

ॐ कल्पवल्ली-

धराय नमः

ॐ विश्वाभयदैक-

कराय नमः

ॐ वशिने नमः

ॐ अक्षमाला-

धराय नमः

ॐ ज्ञानमुद्रा-

वते नमः

ॐ मुद्गरायुधाय नमः

ॐ पूर्णपात्रिणे नमः

ॐ कम्बुधराय नमः

ॐ विधृतालसमोदकाय नमः

ॐ करस्थाम्रफलाय नमः

ॐ चूतकर्णिका-

भृते नमः

ॐ कुठारभृते नमः

ॐ पुष्करस्थ-

स्वर्णघटाय नमः

ॐ पूर्णरत्नाभि-

वर्षकाय नमः

ॐ भारतीसुन्दरी-

नाथाय नमः

ॐ विनायकरति-

प्रियाय नमः

ॐ महालक्ष्मी-

प्रियतमाय नमः

ॐ सिद्धलक्ष्मी-

मनोरमाय नमः

ॐ रमारमेश-

पूर्वाङ्गाय नमः

ॐ उमोमेश्वर-

दक्षिणाय नमः

ॐ महीवराह-

वामाङ्गाय नमः

ॐ रतिकन्दर्प-

पश्चिमाय नमः

ॐ आमोदप्रमोद-

जननाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ स्वप्रमोद-
प्रमोदनाय नमः ३००

ॐ समर्द्धित-
समृद्धिश्रिये नमः
ॐ ऋद्धिसिद्धि-
प्रवर्धनाय नमः
ॐ दन्तसौमुख्य-
सुमुखाय नमः
ॐ कान्तिकन्द-
लिताश्रयाय नमः
ॐ मदनोपाश्रिता-

ङ्घ्रये नमः

ॐ कृतसौमुख्य-
दुर्मुखाय नमः
ॐ विघ्नसोप-
पल्वोपघ्नाय नमः
ॐ सर्वोन्नतमद-
द्रवाय नमः
ॐ विघ्नहृते नमः
ॐ निम्नचरणाय नमः
ॐ द्राविणीशक्ति-
सत्कृताय नमः
ॐ तीव्रप्रसन्न-
वदनाय नमः
ॐ पालिनीपालितै-
कदृशे नमः

ॐ मोहिनीमोहिताय नमः

ॐ भोगदायिने नमः

ॐ कान्तिमण्डिताय नमः

ॐ कामिनीकान्त-
वक्त्रश्रिये नमः

ॐ तीक्ष्णदृष्टये नमः

ॐ एकदृशे नमः

ॐ वसुधारामदाय नमः

ॐ अनादाय नमः

ॐ महाशङ्खनिधि-
प्रभवे नमः

ॐ नमद्वसुमतीमौलि-
प्रह्वपद्मनिधिप्रभवे नमः

ॐ सदासद्गुरु-

संसेव्याय नमः

ॐ रोचिष्केशहृदाश्रयाय नमः

ॐ इशानमूर्ध्ने नमः

ॐ दैत्येन्द्रशिखा-

पवनदंशनाय नमः

ॐ प्रत्यग्रनयनाय नमः

ॐ दिव्याय नमः

ॐ दिव्यास्त्र-

शतहस्तधृते नमः

ॐ ऐरावतादि-सर्वाशा

वारणवारण, प्रियाय नमः

ॐ वज्राद्यस्त्र-परीवराय नमः

ॐ गणचण्ड-

समाश्रयाय नमः

ॐ जयाजयपरी-

वाराय नमः

ॐ विजयाय नमः

ॐ विजयाह्वयाय नमः

ॐ विजयार्चित-

पादाब्जाय नमः

ॐ नित्यानित्या-

वतंसिताय नमः

ॐ विलासिनी-

कृतोल्लासाय नमः

ॐ शुण्डिने नमः

ॐ सौन्दर्य-

मण्डिताय नमः

ॐ अनन्ताय नमः

ॐ अनन्तसुख-

दाय नमः

ॐ सुमङ्गलाति-
मङ्गलाय नमः
ॐ ज्ञानाश्रयाय नमः
ॐ क्रियाधाराय नमः
ॐ इच्छाशक्ति-
निषेविताय नमः
ॐ सुभगासंश्रित-
पदाय नमः
ॐ ललिताललिता-
श्रयाय नमः
ॐ कामिनी-
पालकाय नमः
ॐ कामाय नमः
ॐ कामिनीकेलि-

लालिताय नमः

ॐ सरस्वत्या-

श्रिताय नमः

ॐ गौरीनन्दनाय नमः

ॐ श्रीनिकेतनाय नमः

ॐ गुरुगति-पदाय नमः

ॐ वाचांसिहाय नमः

ॐ वागीश्वरीपतये नमः

ॐ नलिनीकामुकाय नमः

ॐ वामारामाय नमः

ॐ ज्येष्ठामनोरमाय नमः

ॐ रौद्रीमुद्रित-

पादाब्जाय नमः

ॐ हुंबीजोत्तुङ्ग-

शक्तिकाय नमः

ॐ विश्वादिबीज-
स्वप्राणाय नमः
ॐ शक्तिसकीलकाय नमः
ॐ अमृताब्धिकृता-
वासाय नमः
ॐ मदाघूर्णित-
लोचनाय नमः
ॐ उच्छिष्टोच्छिष्ट-
गणकाय नमः
ॐ गणेशाय नमः
ॐ गणनायकाय नमः
ॐ सार्वकालिक-
संसिद्धये नमः
ॐ नित्यशोति-

दिगम्बराय नमः

ॐ अनपायाय नमः

ॐ अनन्तदृष्टये नमः

ॐ अप्रमेयाय नमः

ॐ अजराय नमः

ॐ अमराय नमः

ॐ अनाबिलाय नमः

ॐ अप्रतिहताय नमः

ॐ अच्युताय नमः

ॐ अमर्त्याय नमः

ॐ अक्षराय नमः

ॐ अप्रतर्क्य-
जयाय नमः

ॐ जाप्याय नमः

ॐ अनाधाराय नमः

ॐ अनामयाय नमः

ॐ अमलाय नमः

ॐ अगाधसिद्धये नमः

ॐ अद्वैताय नमः

ॐ अघोराय नमः

ॐ अप्रमिताननाय नमः

ॐ अनाकाराय नमः

ॐ अधिरूपाय नमः

ॐ अग्निबलघ्नाय नमः

ॐ अव्यक्तलक्षणाय नमः

ॐ आधारपीठाय नमः

ॐ आधाराय नमः

ॐ आधाराधेय-

वर्जिताय नमः

ॐ आखुकेतनाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ आशापूरकाय नमः ४००

ॐ आखवाद्यवाहनाय नमः

ॐ इक्षुसागर-
मध्यस्थाय नमः

ॐ इक्षुभक्षण-
लालसाय नमः

ॐ इन्द्रचापाति-
रिक्तश्रिये नमः

ॐ इक्षुचाप-
निषेविताय नमः

ॐ इन्द्रगोप-
समानश्रिये नमः
ॐ इन्द्रनीलनिभ-
द्युतये नमः
ॐ इन्दीवरदल-
श्यामाय नमः
ॐ इन्दुमण्डल-
निर्मलाय नमः
ॐ इध्मप्रियाय नमः
ॐ इळाधाम्ने नमः
ॐ इळावते नमः
ॐ इन्दिराप्रदाय नमः
ॐ इक्ष्वाकुविघ्न-
विध्वंसिने नमः

ॐ इतिकर्तव्यतारताय तमः
ॐ ईशानमौलये नमः
ॐ ईशानाय नमः
ॐ ईशानप्रियाय नमः
ॐ ईतिघ्ने नमः
ॐ ईषणात्रय- कल्पान्ताय नमः
ॐ ईहामात्र विवर्जिताय नमः
ॐ उपेन्द्राय नमः
ॐ उग्राय नमः
ॐ उडुभृन्मौलये नमः
ॐ ईरुण्डकप्रियाय नमः
ॐ उन्नताननाय नमः
ॐ उत्तुङ्गाय नमः
ॐ उदाराय नमः
ॐ त्रिदशाग्रण्ये नमः

ॐ ऊर्जस्वते नमः

ॐ उज्जवला-
त्मीयाय नमः
ॐ ऊहापोहै-
र्दुरासदाय नमः
ॐ ऋग्यजुस्साम-
नयनाय नमः
ॐ ऋद्धिसिद्धि-
समर्पकाय नमः
ॐ ऋजुस्वान्तैक-
सुलभाय नमः
ॐ ऋणात्रय-
विमोचकाय नमः
ॐ स्वभक्तानां-

लुप्तविघ्नाय नमः

ॐ सुरद्विषांलुप्त-
शक्तये नमः
ॐ विमुखार्चनां-
लुप्तश्रिये नमः
ॐ लूताविस्फोट-
नाशनाय नमः
ॐ एकारपीठ-
मध्यस्थाय नमः
ॐ एणपाद-
कृतोदराय नमः
ॐ एजिताखिल-
दैत्यश्रिये नमः
ॐ एधिताखिल-
संश्रयाय नमः

ॐ सर्वनागाना-
मङ्कुशाय नमः
ॐ अङ्कुशाकार-
संस्थिताय नमः
ॐ असमस्तविसर्गान्त-
पदेषुपरिनिष्ठिताय नमः
ॐ कमण्डलुधराय नमः
ॐ कल्पाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः
ॐ कलभाननाय नमः
ॐ कर्मसाक्षिणे नमः
ॐ कर्मभोक्त्रे नमः
ॐ कर्माकर्मफल-
प्रदाय नमः

ॐ ऐश्वर्यनिधये नमः

ॐ ऐहिकामुष्मि-
केश्वर्यपद्राय नमः

ॐ ऐरम्मद-
समुन्मेषाय नमः

ॐ ऐरावत-
समाननाय नमः

ॐ ॐङ्कारवाच्याय नमः

ॐ ॐकाराय नमः

ॐ ओजस्वते नमः

ॐ औषधीपतये नमः

ॐ औदार्यनिधये नमः

ॐ औद्धत्य-धुर्याय नमः

ॐ औन्नत्य-निःसमाय नमः

ॐ कदम्बगोलका-
काराय नमः
ॐ कूष्माण्ड-
गणनायकाय नमः
ॐ कारुण्यदेहाय नमः
ॐ कपिलाय नमः
ॐ कथकाय नमः
ॐ कटिसूत्रभृते नमः
ॐ खर्वाय नमः
ॐ खड्गप्रियाय नमः
ॐ खड्गिने नमः
ॐ खेयान्तःस्थाय नमः
ॐ खनिर्मलाय नमः
ॐ खट्वाङ्गश्रृङ्ग-
निलयाय नमः

ॐ खट्वाङ्गिने नमः

ॐ षड्गुणाश्रयाय नमः

ॐ गुणाढ्याय नमः

ॐ गहनाय नमः

ॐ गेयाय नमः

ॐ गद्यपद्य-
सुधार्णवाय नमः

ॐ गद्यगानप्रियाय नमः

ॐ गर्जाय नमः

ॐ गीतगीर्वाण-
पूजिताय नमः

ॐ गुह्याचाररताय नमः

ॐ गुह्याय नमः

ॐ गुह्यागमनिरू-

पिताय नमः

ॐ गुह्याशयाय नमः

ॐ गुडाब्धिस्थाय नमः

ॐ गुरुगम्याय नमः

ॐ गुरोर्गुरवे नमः

ॐ घटण्टाघुर्घुरिका-
मालिने नमः

ॐ घकुम्भाय नमः

ॐ घटोदराय नमः

ॐ चण्डाय नमः

ॐ चण्डेश्वराध्यक्षाय नमः

ॐ चण्डीशाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ चण्डविक्रमाय-
स्वाहा नमः५००

ॐ चराचरपित्रे नमः
ॐ चिन्तामणये नमः
ॐ चर्वणलालसाय नमः
ॐ छन्दसे नमः
ॐ छन्दोभवाय नमः
ॐ छन्दोदुर्लक्ष्याय नमः
ॐ छन्दविग्रहाय नमः
ॐ जगद्योनये नमः
ॐ जगत्साक्षिणे नमः
ॐ जगदीशाय नमः
ॐ जगन्मयाय नमः
ॐ जयाजयपराय नमः

ॐ अजेय्याय नमः

ॐ जितसिंहासन-
प्रभवे नमः

ॐ ज्वल-ज्वलोल्लसत्-
दानझङ्कारिभ्रमरा-
कुलाय नमः

ॐ टङ्कारस्फार-
संरावाय नमः

ॐ टङ्कारमणि-
नूपुराय नमः

ॐ ठद्वयपल्लवान्ताय नमः

ॐ सर्वमन्त्रेषुसिद्धि-
दाय नमः

ॐ दिण्डिमुण्डाय नमः

ॐ डाकिनीशाय नमः

ॐ डामराय नमः

ॐ डिण्डिमप्रियाय नमः

ॐ ढक्कानिनाद-
मुदिताय नमः

ॐ ढक्काय नमः

ॐ ढौण्डिनायकाय नमः

ॐ तत्त्वानांप्रकृति-
तत्त्वाय नमः

ॐ तत्त्वंपदनिरू-
पिताय नमः

ॐ तारकान्तर-
संस्थाय नमः

ॐ तारकाय नमः

ॐ तारकान्तकाय नमः

ॐ स्थाणवे नमः

ॐ स्थाणुप्रियाङ्गभुवे नमः

ॐ स्थावरजङ्गमा-
धिपाय नमः

ॐ दक्षयज्ञ-
प्रमथनाय नमः

ॐ दात्रे नमः

ॐ दानमदोदयाय नमः

ॐ दयावते नमः

ॐ दिव्यविभवाय नमः

ॐ दण्डभृते नमः

ॐ दण्डनायकाय नमः

ॐ दन्तप्रभिन्ना-
भ्रामालाय नमः

ॐ दैत्यवारण-

दारणाय नमः

ॐ दंष्ट्रालग्नद्विप-

घटाय नमः

ॐ देवार्थात्त-

गजाकृतये नमः

ॐ धनाय नमः

ॐ धनपतिबन्धवे नमः

ॐ धनदाय नमः

ॐ धरणीधराय नमः

ॐ ध्यानैकप्रकटाय नमः

ॐ ध्येयाय नमः

ॐ ध्यानाय नमः

ॐ ध्यानपरायणाय नमः

ॐ ध्वनिप्रकृति-
धित्काराय नमः

ॐ ब्रह्माण्डावलि-
मेखलाय नमः

ॐ नन्दिने नमः

ॐ नन्दिप्रियाय नमः

ॐ नादाय नमः

ॐ नादमध्य-
प्रतिष्ठिताय नमः

ॐ निष्कलाय नमः

ॐ निर्मलाय नमः

ॐ नित्याय नमः

ॐ नित्यानित्याय नमः

ॐ निरामयाय नमः

ॐ परंव्योम्ने नमः

ॐ परंधाम्ने नमः

ॐ परमात्मने नमः

ॐ परंपदाय नमः

ॐ परात्पराय नमः

ॐ पशुपतये नमः

ॐ पशुपाश-
विमोचनाय नमः

ॐ पूर्णानन्दाय नमः

ॐ परानन्दाय नमः

ॐ पुराणपुरुषो-
त्तमाय नमः

ॐ पद्मप्रसन्न-
नयनाय नमः

ॐ प्रणताज्ञान-
नाशनाय नमः

ॐ प्रमाणप्रत्यया-
तीताय नमः

ॐ प्रणतार्ति-
निवारणाय नमः

ॐ फणिहस्ताय नमः

ॐ फणिपति-
फूत्काराय नमः

ॐ फाणितप्रियाय नमः

ॐ बाणा-र्चिताङ्घ्रि-
युगलाय नमः

ॐ बालकेलि-

कुतूहलाय नमः

ॐ ब्रह्मणे नमः

ॐ ब्रह्मर्चितपदाय नमः

ॐ ब्रह्मचारिणे नमः

ॐ बृहस्पतये नमः

ॐ बृहत्तमाय नमः

ॐ ब्रह्मपराय नमः

ॐ ब्राह्मण्याय नमः

ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय नमः

ॐ भ्रूक्षेपदत्त-
लक्ष्मीकाय नमः

ॐ गर्भाय नमः

ॐ गर्भभयापहाय नमः

ॐ भगवते नमः

ॐ भक्तिसुलभाय नमः

ॐ भूतिदाय नमः

ॐ भूतिभूषणाय नमः

ॐ भव्याय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ भूतालयाय नमः ६००

ॐ भोगदात्रे नमः

ॐ भ्रूमध्यगोचराय नमः

ॐ मन्त्राय नमः

ॐ मन्त्रपतये नमः

ॐ मन्त्रिणे नमः

ॐ मदमत्ताय नमः

ॐ मदाननाय

ॐ मेखलाधी-
श्वराय नमः
ॐ मन्दगतये नमः
ॐ दन्तिनिभे-
क्षणाय नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ महावीर्याय नमः
ॐ महाप्राणाय नमः
ॐ महाननाय नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ यज्ञपतये नमः
ॐ यज्ञगोप्त्रे नमः
ॐ यज्ञफल,प्रदाय नमः

ॐ यज्ञेश्वराय नमः

ॐ यज्ञगम्याय नमः

ॐ यागसवे नमः

ॐ याजकप्रियाय नमः

ॐ रसाय नमः

ॐ रसप्रियाय नमः

ॐ रस्यरङ्गकाय नमः

ॐ रावणार्चिताय नमः

ॐ राधारक्षाकराय नमः

ॐ रत्नगर्भाय नमः

ॐ राज्यसुखप्रदाय नमः

ॐ लक्षालक्षप्रदाय नमः

ॐ लक्ष्याय नमः

ॐ लक्ष्यस्थाय नमः

ॐ लड्डुकप्रियाय नमः

ॐ लाभ प्रियाय नमः

ॐ लास्यपराय नमः

ॐ लाभकृते नमः

ॐ लोकविश्रुताय नमः

ॐ वरेण्याय नमः

ॐ वाह्निवदनाय नमः

ॐ वन्द्याय नमः

ॐ वेदान्तगोचराय नमः

ॐ विश्वकर्त्रे नमः

ॐ विश्वचक्षुषे नमः

ॐ विधात्रे नमः

ॐ विश्वतोमुखाय नमः

ॐ वामदेवाय नमः

ॐ विश्वजेत्रे नमः

ॐ वज्रिणे नमः

ॐ वज्र्निवारणाय नमः

ॐ विवस्वद्धन्धनाय नमः

ॐ विश्वाधाराय नमः

ॐ विश्वेश्वराय नमः

ॐ विभवे नमः

ॐ शास्त्रे नमः

ॐ शाखाग्र्निलयाय नमः

ॐ शरण्याय नमः

ॐ शम्बरेश्वराय नमः

ॐ शब्द्-ब्रह्ममयाय नमः

ॐ प्राणाय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ शक्तिगणेश्वराय नमः

ॐ षड्ऋतुकुसुम-
स्रग्विने नमः
ॐ षडाधाराय नमः
ॐ षडक्षराय नमः
ॐ संसारवैद्याय नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वभेषजभेषजाय नमः
ॐ सृष्टिस्थिति-
लयक्रीडाय नमः
ॐ असुरकुञ्जर-
भेदनाय नमः
ॐ सिन्दूरित-
महाकुम्भाय नमः
ॐ सदसद्व्यक्ति-
दायकाय नमः

ॐ समुद्रमथने-
साक्षिणे नमः
ॐ स्वसंवेद्याय नमः
ॐ स्वद्दक्षिणाय नमः
ॐ स्वतन्त्राय नमः
ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
ॐ सामगानरताय नमः
ॐ सुखिने नमः
ॐ हंसाय नमः
ॐ हस्तिने नमः
ॐ पिशाचेशाय नमः
ॐ हवनाय नमः
ॐ हव्यकव्यभुजे नमः
ॐ हव्याय नमः

ॐ हुतप्रियाय नमः
ॐ हृष्टाय नमः
ॐ हृल्लेखमन्त्र-
मध्यगाय नमः
ॐ क्षेत्राधिपाय नमः
ॐ क्षमाभर्त्रे नमः
ॐ क्षमापार-
परायणाय नमः
ॐ क्षिप्रक्षेमकराय नमः
ॐ क्षेमानन्दाय नमः
ॐ क्षोणीसुरद्रुमाय नमः
ॐ धर्मप्रदाय नमः
ॐ अर्थदाय नमः
ॐ कामदात्रे नमः

ॐ सौभाग्यवर्धनाय नमः

ॐ विद्याप्रदाय नमः

ॐ विभवदाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ भुक्तिमुक्ति-
फलप्रदाय नमः ७००

ॐ अतिरूपकराय नमः

ॐ वीरश्रीप्रदाय नमः

ॐ विजयप्रदाय नमः

ॐ सर्ववश्यकराय नमः

ॐ गर्भदोषघ्ने नमः

ॐ पुत्रपौत्रदाय नमः

ॐ मेधादाय नमः

ॐ कीर्तिदाय नमः

ॐ शोकहारिणे नमः

ॐ दौर्भाग्य-

नाशनाय नमः

ॐ प्रतिवादि-

मुखस्तम्भाय नमः

ॐ दुष्टचित्त-

प्रसादनाय नमः

ॐ पराभिचार-

श्रवणाय नमः

ॐ दुःखघ्नाय नमः

ॐ बन्धमोक्षदाय नमः

ॐ लवत्रुटिकलाकाष्ठा-

निमेषतत्पराय नमः

ॐ क्षणाय नमः

ॐ घटीमुहूर्त-
प्रहाराय नमः

ॐ दिवान्नक्ताय नमः

ॐ अहर्निशाय नमः

ॐ पक्षाय नमः

ॐ मासाय नमः

ॐ अयनाय नमः

ॐ वर्षाय नमः

ॐ युगाय नमः

ॐ कल्पाय नमः

ॐ महालयाय नमः

ॐ राशितारातिथियोग-
वारार्क्षकरणां-
शकाय नमः

ॐ लग्नहोरा-

कालचक्राय नमः

ॐ मेरवे नमः

ॐ सप्तर्षिभ्यः नमः

ॐ ध्रुवाय नमः

ॐ राहवे नमः

ॐ मन्दाय नमः

ॐ कवये नमः

ॐ जीवाय नमः

ॐ बुधाय नमः

ॐ भौमाय नमः

ॐ शशिने नमः

ॐ रवये नमः

ॐ कालशक्तये नमः

ॐ स्थितये नमः

ॐ विश्वस्मै नमः

ॐ स्थावराय नमः

ॐ जङ्गमाय नमः

ॐ जगते नमः

ॐ भुवे नमः

ॐ अद्भ्यः नमः

ॐ अग्नये नमः

ॐ मरुते नमः

ॐ व्योम्ने नमः

ॐ अहङ्कृतये नमः

ॐ प्रकृतये नमः

ॐ पुंसे नमः

ॐ ब्रह्मणे नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ शिवाय नमः

ॐ रुद्राय नमः

ॐ ईशाय नमः

ॐ शक्तये नमः

ॐ सदाशिवाय नमः

ॐ त्रिदशेभ्यः नमः

ॐ पितृभ्यः नमः

ॐ सिद्धेभ्यः नमः

ॐ यक्षरक्षोभ्यः नमः

ॐ किन्नरेभ्यः नमः

ॐ सिद्धविद्याधरेभ्यः नमः

ॐ भूतेभ्यः नमः

ॐ मनुष्येभ्यः नमः

ॐ पशुभ्यः नमः

ॐ खगेभ्यः नमः

ॐ समुद्रेभ्यः नमः

ॐ सरित्भ्यः नमः

ॐ शैलेभ्यः नमः

ॐ भूतभव्य-
भवोद्भवाय नमः

ॐ सांख्य,पातञ्जल,-
योगेभ्यः नमः

ॐ पुराण,श्रुति-
स्मृतिभ्यः नमः

ॐ वेदाङ्गेभ्यः नमः

ॐ समाचाराय नमः

ॐ मीमांसान्याय-
विस्ताराय नमः

ॐ आयुर्वेदाय नमः

ॐ धनुर्वेदाय नमः

ॐ गन्धर्वाय नमः

ॐ काव्याय नमः

ॐ नाटकाय नमः

ॐ वैखानसाय नमः

ॐ भागवताय नमः

ॐ मानुष्याय नमः

ॐ पाञ्चरात्रिकाय नमः

ॐ शैवाय नमः

ॐ पाशुपताय नमः

ॐ कालीमुखाय नमः

ॐ भैरवशासनाय नमः

ॐ शाक्ताय नमः

ॐ वैनायकाय नमः

ॐ सौर,जैनार्ह-
संहिताय नमः

ॐ सते नमः

ॐ विराजे नमः

ॐ असते नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ व्य क्ताय नमः८००

ॐ अव्यक्ताय नमः

ॐ सचेतनाय नमः

ॐ अचेतनाय नमः

ॐ बन्धकाय नमः

ॐ मोक्षसुखदाय नमः

ॐ भोगाय नमः

ॐ योगाय नमः

ॐ महते नमः

ॐ अणवे नमः

ॐ स्वस्तिहुंफट्स्वधा-
श्रौषट्वौषट्-
वषण्मयाय नमः

ॐ ज्ञानाय नमः

ॐ विज्ञानाय नमः

ॐ आनन्दाय नमः

ॐ बोधाय नमः

ॐ संविदे नमः

ॐ समाय नमः

ॐ शमाय नमः

ॐ एकाय नमः

ॐ एकाक्षराधाराय नमः

ॐ एकाक्षरपरयणाय नमः

ॐ एकाग्रधिये नमः

ॐ एकवीराय नमः

ॐ एकानेकस्वरूप-
धृषे नमः

ॐ द्विरूपाय नमः

ॐ द्विभुजाय नमः

ॐ द्व्यक्षाय नमः

ॐ द्विरदाय नमः

ॐ द्विपरक्षकाय नमः

ॐ द्वैमातराय नमः

ॐ द्विवदनाय नमः

ॐ द्वन्द्वहीनाय नमः

ॐ द्वयातिगाय नमः

ॐ त्रिधामात्राकृत-
स्नेहाय नमः

ॐ त्रिवर्गफल-
दायकाय नमः

ॐ त्रिगुणात्मने नमः

ॐ त्रिलोकादये नमः

ॐ त्रिशक्त्यंशाय नमः

ॐ त्रिलोचनाय नमः

ॐ चतुर्बाहवे नमः

ॐ चतुर्दन्ताय नमः

ॐ चतुरात्मने नमः

ॐ चतुर्मुखाय नमः

ॐ चतुर्वर्गमयो-
पायाय नमः
ॐ चतुर्वर्णाश्रमा-
श्रयाय नमः
ॐ चतुर्वेदवचोवृत्ति-
परिवृत्तिप्रवर्तकाय नमः
ॐ चतुर्थीपूजन-
प्रीताय नमः
ॐ चतुर्थीतिथि-
सम्भवाय नमः
ॐ पञ्चाक्षराय नमः
ॐ पञ्चात्मने नमः
ॐ पञ्चास्याय नमः
ॐ पञ्चकृत्यकृते नमः

ॐ पञ्चधाराय नमः

ॐ पञ्चवर्णाय नमः

ॐ पञ्चाक्षर-
परायणाय नमः

ॐ पञ्चतालाय नमः

ॐ पञ्चकराय नमः

ॐ पञ्चप्रणव-
भाविताय नमः

ॐ पञ्चब्रह्ममय-
स्फूर्तये नमः

ॐ पञ्चावरण-
वारिताय नमः

ॐ पञ्चभक्ष्य-
प्रियाय नमः

ॐ पञ्चबाणाय नमः

ॐ पञ्चशिवा-
त्मकाय नमः
ॐ षट्कोणपीठाय नमः
ॐ षट्चक्रधाम्ने नमः
ॐ षड्ग्रन्थिभेदकाय नमः
ॐ षडङ्गध्वान्त-
विध्वंसिने नमः
ॐ षडङ्गल-
महाह्रदाय नमः
ॐ षणमुखाय नमः
ॐ षणमुखभ्रात्रे नमः
ॐ षड्शक्ति-
परिवारिताय नमः
ॐ षड्वर्गवैरि-
विध्वंसिने नमः

ॐ षडूर्मि-
भयभञ्जनाय नमः
ॐ षट्कर्मदूराय नमः
ॐ षट्कर्मिणे नमः
ॐ षाड्गुण्याय नमः
ॐ षड्रसाश्रयाय नमः
ॐ सप्तपाताल-
चरणाय नमः
ॐ सप्तद्वीपोरु-
मण्डलाय नमः
ॐ सप्तस्वर्लोक-
मुकुटाय नमः
ॐ सप्तसप्ति-
वरप्रदाय नमः

ॐ सप्ताङ्गराज्य-
सुखदाय नमः
ॐ सप्तर्षिगण-
वन्दिताय नमः
ॐ सप्तच्छन्दोनिधये नमः
ॐ सप्तहोत्रे नमः
ॐ सप्तस्वराश्रयाय नमः
ॐ सप्ताब्धिकेलि-
कासाराय नमः
ॐ सप्तमातृ-
निषेविताय नमः
ॐ सप्तच्छन्द-
महामोदाय नमः
ॐ सप्तच्छन्द-
सुखप्रभवे नमः

ॐ अष्टमूर्तये नमः

ॐ ध्येयमूर्तये नमः

ॐ अष्टप्रकृति-
कारणाय नमः

ॐ अष्टाङ्गयोग-
फलभृते नमः

ॐ अष्टपत्राम्बुजा-
सनाय नमः

ॐ अष्टशक्ति-
समानश्रिये नमः

ॐ अष्टैश्वर्य-
प्रदायकाय नमः

ॐ अष्टपीठो-
पपीठश्रिये नमः

ॐ अष्टमातृ-
समावृताय नमः
ॐ अष्टभैरव-
सेव्याय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अष्टव-
सुवन्द्याय नमः १००

ॐ अष्टमूर्तिमते नमः
ॐ अष्टवक्रस्फुर-
न्मूर्तये नमः
ॐ अष्टद्रव्यहविः-
प्रियाय नमः

ॐ अष्टश्रिये नमः

ॐ अष्टसामश्रिये नमः
ॐ अष्टहृष्टसंगीत-
काय नमः
ॐ नवनागासना-
ध्येयाय नमः
ॐ नवनिविड-
सेविताय नमः
ॐ नवद्वारपुरा-
धाराय नमः
ॐ नवाधार-
निकेतनाय नमः
ॐ नवनारायण-
स्तुत्याय नमः
ॐ नवदुर्गा-

निषेविताय नमः

ॐ नवनाथमहा-
नाथाय नमः

ॐ नवनाग-
विभूषणाय नमः

ॐ नवरत्न-
विचित्राङ्गाय नमः

ॐ नवशक्तिश-
राध्यताय नमः

ॐ दशात्मकाय नमः

ॐ दशभुजाय नमः

ॐ दशदिक्पति-
वन्दिताय नमः

ॐ दशध्येयाय नमः

ॐ दशप्राणाय नमः

ॐ दशेन्द्रिय-
नियामकाय नमः
ॐ दशाक्षर-
महामन्त्राय नमः
ॐ दशाशाव्यापि-
विग्रहाय नमः
ॐ एकादशरुद्र-
स्तुत्याय नमः
ॐ एकादशाक्षरै-
र्मनवे नमः
ॐ द्वादशोद्दण्ड-
दोर्दण्डाय नमः
ॐ द्वादशान्त-
निकेतनाय नमः

ॐ त्रयोदशविधा-
भिन्नविश्वे-
देवादिदैवताय नमः
ॐ चतुर्दशेन्द्रवरदाय नमः
ॐ चतुर्दशमनुप्रभवे नमः
ॐ चतुर्दशाद्य-
विद्याढ्याय नमः
ॐ चतुर्दशजगत्पतये नमः
ॐ पञ्चदशसाम्ने नमः
ॐ पञ्चदशशीतांशु-
निर्मलाय नमः
ॐ षोडशाधार-
निलयाय नमः
ॐ षोडशाम्बर-

मातृकाय नमः

ॐ षोडशान्त-
पदावासाय नमः
ॐ षोडशेन्दु-
कलात्मकाय नमः
ॐ सप्तदशीकलायै नमः
ॐ सप्तदशाक्षराय नमः
ॐ अष्टादश-
द्वीपपतये नमः
ॐ अष्टादशपुराकृते नमः
ॐ अष्टादशौषधी-
सृष्टये नमः
ॐ अष्टादश-
विधिप्रभवे नमः
ॐ अष्टादशलिपि-
कृतये नमः

ॐ अष्टादश-
विजातिकृते नमः
ॐ एकविंशत्पुंसे नमः
ॐ एकविंशत्यङ्गुलि-
पल्लवाय नमः
ॐ चतुर्विंशति-
तत्त्वात्मने नमः
ॐ पञ्चविंशति-
पूरुषाय नमः
ॐ सप्तविंशति-
तारेशाय नमः
ॐ सप्तविंशति-
योगकृते नमः
ॐ द्वात्रिंशद्भैरवा-

धीशाय नमः

ॐ चतुस्त्रिंशत्-
महाह्रदाय नमः
ॐ षड्त्रिंशत्तत्त्व-
सम्भूतये नमः
ॐ अष्टात्रिंशत्-
कलात्मकाय नमः
ॐ नमदेकोनपञ्चाशत्-
मरुद्दुर्गनिरर्गलाय नमः
ॐ पञ्चाशत्-
अक्षरश्रेणये नमः
ॐ पञ्चाश-त्रुद्र-
विग्रहाय नमः
ॐ पञ्चाशद्विष्णु-
शक्तीशाय नमः
ॐ पञ्चाशन्मातृकालयाय नमः

ॐ द्विपञ्चाशत्
द्विपश्रेणये नमः
ॐ त्रिषष्ट्यक्षर-
संश्रयाय नमः
ॐ चतुःषष्टिमहासि-
द्धयोगिनीवृन्द
वन्दिताय नमः
ॐ चतुःष्टयर्ण-
निर्णेताय नमः
ॐ चतुःषष्टिकला-
निधये नमः
ॐ अष्टषष्टिमहातीर्थ
क्षेत्रभैरवभावनाय नमः
ॐ चतुर्णवति-
मन्त्रात्मने नमः

ॐ षण्णवत्यधिक-
प्रभवे नमः
ॐ शतानन्दाय नमः
ॐ शतधृतये नमः
ॐ शतपत्रायते-
क्षणाय नमः
ॐ शतानेकाय नमः
ॐ शतमुखाय नमः
ॐ शतधार-
वरायुधाय नमः
ॐ सहस्त्रपत्रनिलयाय नमः
ॐ सहस्त्रफणि-
भूषणाय नमः
ॐ सहस्त्रशीर्षाय-

पुरुषाय नमः

ॐ सहस्त्राक्षाय नमः

ॐ सहस्त्रपादे नमः

ॐ सहस्त्रनाम-
संस्तुत्याय नमः

ॐ सहस्त्राक्ष-
बलापहाय नमः

ॐ दशसहस्त्र-
फणिभृते नमः

ॐ फणिराज-
कृतासनाय नमः

ॐ अष्टाशीति,सहस्त्रौघ-
महर्षिस्तोत्र,पाठिताय नमः

ॐ लक्ष्याधार-
प्रियाधाराय नमः

ॐ लक्ष्याधार-

मनोलयाय नमः

ॐ चतुर्लक्ष-

जगत्प्रीताय नमः

ॐ चतुर्लक्ष-

प्रकाशकाय नमः

ॐ कोटिसूर्य-

प्रतीकाशाय नमः

ॐ कोटिचन्द्रांशु-

निर्मलाय नमः

ॐ शिवोद्भवद्व्यष्टकोटि-

विनायकधुरन्धराय नमः

ॐ सप्तकोटिमहामन्त्र-

मन्त्रितावयवद्युतये नमः

ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी-
प्रणतपादुकाय नमः

ॐ चतुरशीतिलक्षात्मजीव-
देहव्यवस्थितये नमः

ॐ अनन्तनाम्ने नमः

ॐ अनन्तश्रिये नमः

ॐ अनन्ताय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अनन्तसौख्यदाय
नमः[१०००]

विजयेश्वर प्रकाशन



प्रकाशक:
विजयेश्वर पंचांग कार्यालय
अजीत कालोनी, गोल गुजराल, जम्मू
फोन: 2555607, 2555763
9419133233, 9419119922, 9419240070
punchang.vijayshwar@yahoo.com